गंखु सुमन्याँ की दो कविताएँ

(1)

बारिश

रोते, रोते
बारिश हुई
कौन था वो
जिसने युद्ध में
पहली चीख लगाई
रोते-रोते!
इस बंजर में
आसमान एक धूसर रंग लिए है,
इसके पीछे छिपा है
युद्ध...
देवताओं का सारा इतिहास
सारा अतीत
जिसके, केवल आँसू हम पर गिरे
हम वो नासमझ,
अल्पज्ञ हैं
अँधेरे में ढूंढ़ते हुए
उन संदेहों को पाले हुए हैं,
जिसका भार हम उठा नहीं सकते।
हे ईश्वर! हमारे लिए
फिर से रास्ता खोल दो,
लाल ऊंची दीवार
समुद्र और हमारे दृश्य
हमारी सुनने की क्षमता
सबको...
भर दीजिए फिर से
इस जहां में
अपनी उपस्थिति का भयावह प्रमाण।

(म्यूस इंडिया के अंक 112, नवंबर-दिसंबर 2023 में प्रकाशित)

(2)

संतरे

संतरे की उपस्थिति
बूढ़े लोगों के सपनों में
मंगलकारी फल की तरह
जो उनको मिले हैं एकदम अंत में,
सभी तरह के श्रम से
निवृत्त हो जाने के पश्चात।
पहाड़ों की पतली पगडंडियां
जिनकी भसकने वाली मिट्टी पर
संतुलन बनाकर चढ़ना,
सूरज की रोशनी में चमकते
सबसे पके फल को चुनना,
जिनकी गंध में मौजूदगी
सभी अच्छी चीजों की
अच्छा पानी, अच्छी धूप, अच्छी मिट्टी,
अच्छी हवा...
बुजुर्ग, छील रहे हैं हाथ
इन हाथों पर हैं अनगिनत दाग और निशान
सूर्य की रौशनी में तपे हुए
जिनकी उभरी हुई नसें
हिल-डुल रही हैं
लगता है जैसे जिंदा हों।
और फिर रस भरे संतरे का स्वाद
मिठास और नमकीन मिश्रण संग
मुंह में घुमा और घुलाकर
बीज फेंक देना
और फिर महसूस करना
कृतज्ञता...
अपने को मिले इस सौभाग्य के लिए।

(मैट्रिक्स एंथोलॉजी के खंड-I, 2022 में प्रकाशित)

***(लेखकीय परिचय** : गंखु सुमन्याँ, वांचा राजकुमार शासकीय महाविद्यालय, देवमाली, अरुणाचल प्रदेश के अंग्रेजी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। आप रचनात्मक रूप से बेहद सक्रिय हैं और आपकी कविताएँ राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। मोबा:8414912718, ई-मेल : gankhu.sumnyan@gmai.com)*